Principle of Maximum Social advantage
अधिकतम सामाजिक लाभ का सिद्धान्त

राज्य के वित्तीय नीति निर्धारण के अन्तर्गत सरकार आय व व्यय सम्बन्धी दो मुख्य कार्यों को करती है। लेकिन आय और व्यय का सामंजस्य कैसे हो इसपर विभिन्न अर्थशास्त्रियों के अलग अलग विचारधारा है।
प्राचीन विचारधारा के अनुसार सरकार वही आदर्श मानी जाती है जो कम से कम कर लगाती है और कम से कम खर्च करती है। इसलिए J. B. Say ने कहा कि "सार्वजनिक वित्त की वही योजना सबसे उपयुक्त होती है जिसमें न्यूनतम व्यय किया जाता है और सब करों में वही सबसे अच्छा होता है जिसकी मात्रा सबसे कम होती है।"
आधुनिक अर्थशास्त्रियों के अनुसार सरकार के न सभी कर अभिशाप है और न सभी व्यय अनुत्पादक होते है। वर्तमान समय में 'कल्याणकारी राज्य' की स्थापना ही मुख्य उद्देश्य है। जिसमें सरकार का आय और व्यय दोनो में इसप्रकार का सामंजस्य हो कि समाज को अधिकतम लाभ की प्राप्ती हो।
अधिकतम सामाजिक लाभ का प्रतिपादन प्रो. डाल्टन ने किया था। डाल्टन के अनुसार "राजस्व की सर्वोत्तम व्यवस्था वही कहलायगी जिसकी क्रियाओं में अधिकतम सामाजिक कल्याण की प्राप्ती होती हो।" यदि सरकार के किसी कार्य से या कर लेने से कुछ व्यक्तियों को नुकसान हो पर सम्पूर्ण समाज का कल्याण हो तो वह राजस्व के सिद्धान्त के अनुसार न्यायोचित माना जाता है।

Scanned with OKEN Scanner

राजस्व के सिद्धान्त के अनुसार सरकार इसप्रकार कर ले तथा उसे व्यय करे कि अनुपयोगिताओं से ऊपर उपयोगिताओं की मात्रा अधिकतम हो।
अधिकतम सामाजिक लाभ के लिए सरकार को निम्न क्रियायें अनिवार्य है।-

1. आय के वितरण में परिवर्तन -
सरकार कर के रूप में धनी वर्ग के लोगों से आय प्राप्त करती है और उसे निर्धन वर्ग के लोगों की आवश्यकताओं की पूर्ति पर व्यय करती है। इससे आय की असमानता कम होती है जो अधिकतम कल्याण को बढ़ाता है।

2. उत्पादन में परिवर्तन -
कर चुकाने के लिए या तो लोग उपभोग कम करते है या बचत कम करते है जिसका प्रभाव उत्पादन पर पड़ता है। इसलिए अधिकतम सामाजिक लाभ के लिए प्रगतिशील कर का लगना आवश्यक है।

3. बचत पर प्रभाव -
अधिकतम सामाजिक लाभ के लिए यह आवश्यक है कि कर इसप्रकार लगाया जाय जिससे कि समाज में बचत को प्रोत्साहन मिले।
इसके अतिरिक्त अधिकतम सामाजिक लाभ के लिए उक्त सारी बातों पर ध्यान देना आवश्यक होता है।
अधिकतम सामाजिक लाभ का सिद्धान्त उपयोगिता ह्रास नियम पर आधारित है। सरकारे प्रायः धनी वर्गों पर ऊँचे कर लगाती है और इनसे प्राप्त होने वाली आय निर्धन वर्गों पर व्यय की जाती है। धनी वर्गों पर करारोपण से उनकी सीमान्त उपयोगिता

Scanned with OKEN Scanner

बढ़ती है दूसरी ओर जब इन करों से प्राप्त आय गरीबों की सुविधाओं पर खर्च किया जाता है तो इससे उनकी सीमान्त उपयोगिता शुरू में बढ़ती है लेकिन अधिकाधिक खर्च होने पर उनकी सीमान्त उपयोगिता बहुत शुरू हो जाती है। डाल्टन के अनुसार "यह प्रक्रिया सरकार द्वारा उस सीमा तक प्रचालित रखी जानी चाहिए जबतक बढ़ती हुई सीमान्त उपयोगिता गरीबों की घटती हुई सीमान्त उपयोगिता के बराबर नहीं हो जाती। अर्थात कर की मात्रा में इकाई से प्राप्त होने वाली अनुपयोगिता कर से प्राप्त रकम की व्यय करने से समाज को प्राप्त होने वाली उपयोगिता के बराबर होनी चाहिए। उपयुक्त सिद्धान्त को निम्नलिखित तालिका द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है —

इकाई	करारोपण से होनेवाली अनुपयोगिता	कर से प्राप्त रकम को व्यय करने से प्राप्त उपयोगिता
1	1	36
2	4	28
3	8	24
4	12	22
5	**19**	**19**
6	26	7
7	34	2

उक्त तालिका से स्पष्ट है कि पाँचवे इकाई से अधिक कुल करारोपण नहीं होना चाहिए क्योंकि यदि वह अधिक होता है तो सामाजिक लाभ अधिकतम नहीं हो सकता। इसे रेखाचित्र द्वारा प्रदर्शित किया जा सकता है —

Scanned with OKEN Scanner

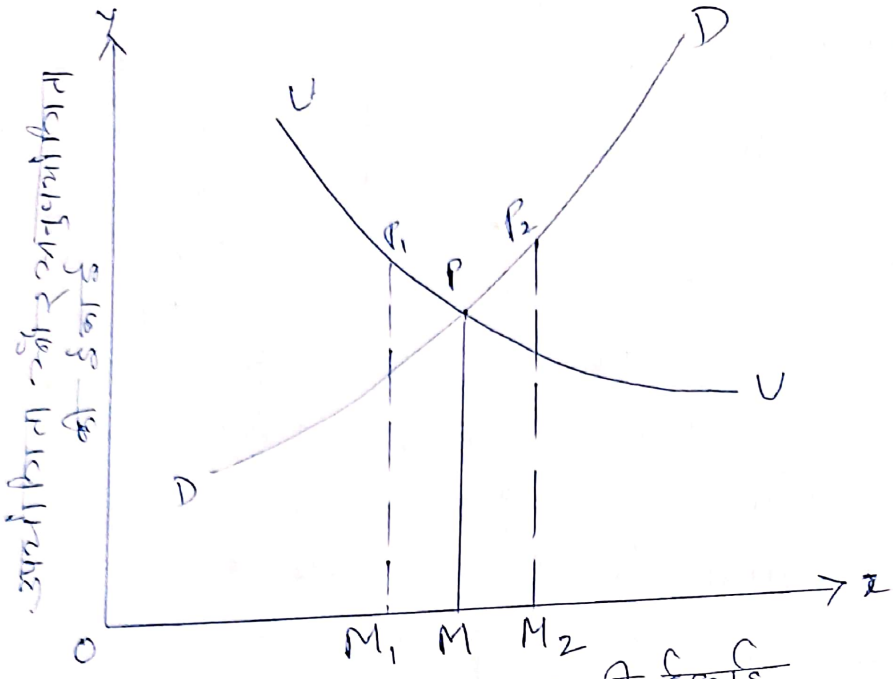

कर एवं व्यय की ईकाई

उपयुक्त चित्र में OX रेखा पर कर और व्यय की ईकाई तथा OY रेखा पर उपयोगिता और अनुपयोगिता को दिखाया गया है। UU वक्र सरकारी व्यय की प्रत्येक ईकाई से क्रमशः घटती हुई उपयोगिता को व्यक्त करता है तथा DD वक्र कर की प्रत्येक ईकाई से क्रमशः बढ़ती हुई अनुपयोगिता को व्यक्त करता है। दोनों वक्र एक दूसरे को P बिन्दु पर काटते है। यह equilibrium point साम्य बिन्दु होता है। इस बिन्दु पर सामाजिक लाभ अर्थात सामाजिक लागत अर्थात उपयोगिता एवं बराबर होते है। OM मात्रा से अधिक कर लेने तथा व्यय करने से अनुपयोगिता अधिक और उपयोगिता कम हो जाता है जो P_2M_2 रेखा से स्पष्ट है और OM से कम कर लेने तथा व्यय करने से उपयोगिता अधिक और अनुपयोगिता कम हो जाती है जैसा कि P_1M_1 रेखा से स्पष्ट है। अतः OM कर और व्यय की आदर्श मात्रा से

ही सामाजिक लाभ अधिकतम हो सकता है। अधिकतम सामाजिक लाभ की मात्रा कुल सामाजिक लाभ तथा कुल सामाजिक लागत वक्र द्वारा भी स्पष्ट किया जा सकता है। अधिकतम सामाजिक लाभ उस बिन्दु पर प्राप्त होगा जहाँ कुल सामाजिक लाभ तथा कुल सामाजिक लागत का अन्तर सबसे अधिक है। इसे चित्र द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है—

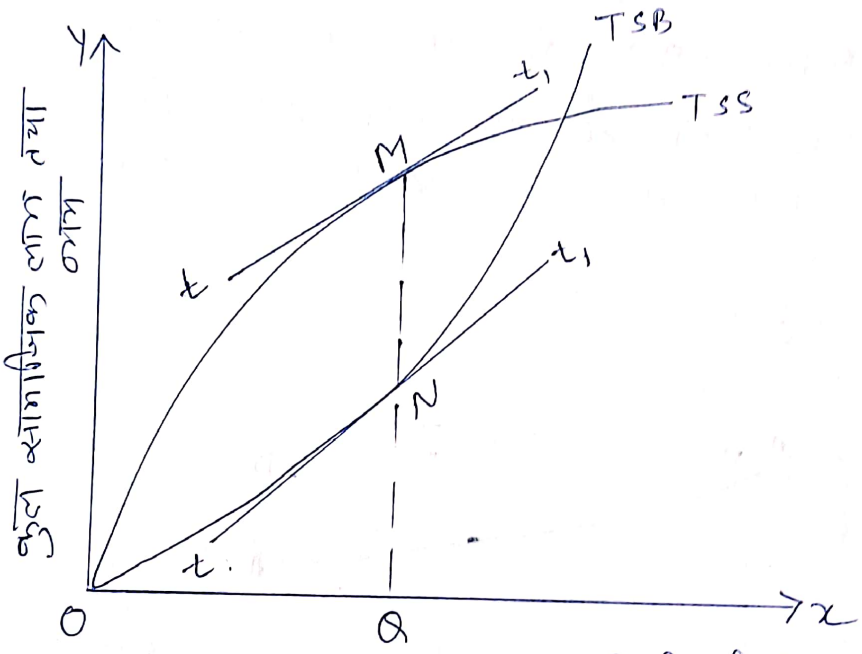

कर तथा व्यय की ईकाईयाँ

उपयुक्त चित्र में TSB वक्र सार्वजनिक व्यय से प्राप्त कुल सामाजिक लाभ को दर्शाता है जिसका ढाल ऊपर की ओर उठता हुआ प्राप्त होता है जो दर्शाता है कि जैसे जैसे सार्वजनिक व्यय में वृद्धि होती जाती है कुल सामाजिक लाभ बढ़ता जाता है किन्तु एक बिन्दु के बाद घटने लगता है। इसके विपरीत TSS वक्र कर से उत्पन्न कुल सामाजिक लागत को प्रदर्शित करता है जो करारोपण की मात्रा के साथ कुल लागत बढ़ता जाता है किन्तु एक बिन्दु के बाद कुल लागत बहुत तीव्र गति से बढ़ने लग जाता है।

यहाँ TSB तथा TSS वक्र का अन्तर शुद्ध सामाजिक लाभ को दर्शाता है जो MN रेखा से दर्शाया गया है।

अतः सरकार को OQ मात्रा में व्यय करना चाहिए ताकि अधिकतम लाभ प्राप्त हो सके।

अधिकतम सामाजिक लाभ के लिए व्यय करते समय निम्न बातों को ध्यान में रखना पड़ता है —

① प्रत्येक व्यय से सीमांत उपयोगिता समान रहनी चाहिए अर्थात किसी मद पर आवश्यकता से अधिक व्यय करना और दूसरी मद की उपेक्षा कर देने से सामाजिक लाभ में वृद्धि नहीं की जा सकती।

② लाभ ऐसा हो कि उत्पादन बढ़े।

इसे चित्र द्वारा भी स्पष्ट कर सकते हैं —

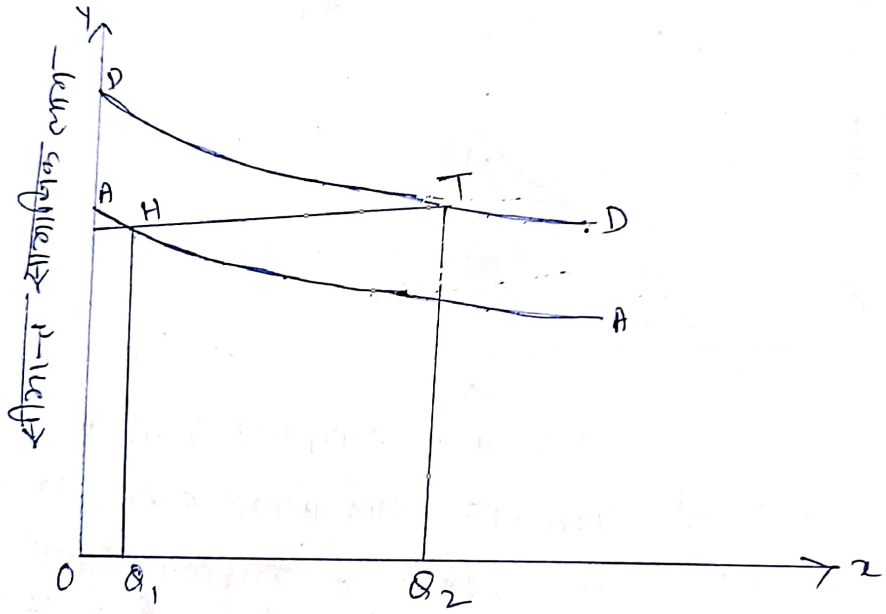

उपयुक्त चित्र में AA वक्र कृषि पर किया गया सीमान्त व्यय तथा DD वक्र सुरक्षा पर किये गए सीमान्त व्यय को दर्शाता है। यहाँ दोनों से प्राप्त सीमांत सामाजिक लाभ की स्थिति $HQ = TQ_2$ होगा। अतः कृषि पर OQ_1 तथा सुरक्षा पर OQ_2 मात्रा में व्यय किए जाए तो दोनों से सीमान्त सामाजिक लाभ समान मात्रा में प्राप्त होगा और यही अधिकतम सामाजिक लाभ होगा।

अधिकतम सामाजिक लाभ के लिए कर लगाते समय भी निम्न बातों को ध्यान में रखना

...ता है —

करारोपण कर देने की क्षमता के आधार पर किया जाना चाहिए। ताकि सभी व्यक्तियों पर समान रूप से कर का भार पड़े।

(6) करारोपण के समय काम करने एवं बचत करने की इच्छा एवं योग्यता पर बुरा प्रभाव न पड़े।

इसे रेखाचित्र द्वारा भी स्पष्ट किया जा सकता है —

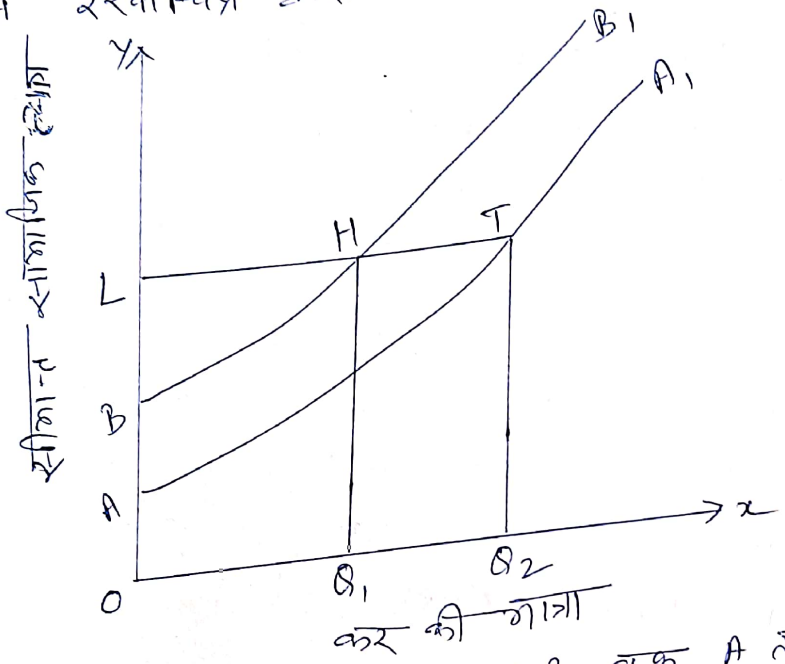

उपर्युक्त चित्र में AA_1 तथा BB_1 वक्र A तथा B व्यक्तियों द्वारा कर अदा करने से सीमांत सामाजिक त्याग को प्रदर्शित करता है। कुल त्याग उसी अवस्था में न्यूनतम होगा जहाँ A तथा B का सीमांत सामाजिक त्याग बराबर होगा। अतः सरकार A व्यक्ति पर OQ_2 तथा B व्यक्ति पर OQ_1 के बराबर कर लगायेगी क्योंकि यहाँ $TQ_2 = HQ_1$।

यद्यपि इस सिद्धान्त का बहुत अधिक महत्व है किन्तु व्यवहार में अनेकों कठिनाइयाँ उत्पन्न होती हैं जो निम्नलिखित है —

सर्वप्रथम करों से प्राप्त सीमांत अनुपयोगिता तथा राजकीय व्यय से प्राप्त सीमान्त उपयोगिता का पता लगाना तथा इसमें सामंजस्य स्थापित करना बहुत ही कठिन कार्य है।

सरकारी व्यय का उद्देश्य सामान्यतया

Scanned with OKEN Scanner

भविष्य में आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बनाया होता है परन्तु व्यय कार्य के लिए जो राशि संग्रह की जाती है, उसे वर्तमान में ही वसूल किया जाता है। इसप्रकार करों का प्रभाव तत्काल देखा जा सकता है जबकि व्यय का प्रभाव भविष्य में पड़ता है। ऐसी स्थिति में भी करों की वर्तमान अनुपयोगिता तथा व्यय से भविष्य में मिलने वाली उपयोगिता का अनुमान लगाना कठिन कार्य है।

करारोपण द्वारा प्राप्त रकम के व्यय से समाज के कुछ वर्गों को लाभ होता है। इस लाभ को भी ठीक ठीक मापना कठिन कार्य है।

उपयुक्त आलोचनाओं के बावजूद बहुत हद तक इस सिद्धान्त को व्यवहारिक रूप दिया जा सकता है। सरकार अपनी आर्थिक नीतियों पर विचार करते समय अधिकतम सामाजिक लाभ का विशेष ख्याल रखे।

—x—

Dr Sandhya Rani
Dept of Economics
Maharaja College

Scanned with OKEN Scanner